

## पद १५६

(रागः कानडा - तालः जलद त्रिताल)

प्रीतमकी झलक देख उठीमा । उचक बैठी मा । पिहुंन देखीमा । हे  
सपनोमें, निंदरियामे दचक उचक अचानक चौक परी ॥ध्रु. ॥  
बारबार पिहुं मोरे मन आवे छब देखन ललचावे, जिया ललचावे  
याकहूं सोंच सोंच मानिक मुख मोहे भूल परी ॥१॥